14 नवम्बर, 2017 को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के तीसरे दीक्षान्त समारोह के अवसर पर राज्यपाल डॉ0 कृष्ण कांत पाल का सम्बोधन।

.....

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के तीसरे दीक्षान्त समारोह को सम्बोधित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। यह तीसरा दीक्षान्त समारोह इस बात की ओर बार–बार संकेत करता है कि यह विश्वविद्यालय अपने आदर्शों के पालन व मानकों की पूर्ति करने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसके लिए मैं विश्वविद्यालय के कुलपति, कार्यपरिषद, विद्यापरिषद के सभी सदस्यों, यहाँ के शिक्षकों सहित समस्त छात्रों को बधाई देता हूँ। उम्मीद है कि प्रगति के शिखर पर पहुँचने के लिए यह विश्वविद्यालय लगातार प्रयास करता रहेगा।

दीक्षान्त समारोह छात्रों के लिए गौरवशाली अवसर होता है। इस अवसर पर मैं डिग्री व डिप्लोमा उपाधि पाने वाले तथा अपनी पढ़ाई में श्रेष्ठ पदर्शन करने वाले छात्र–छात्राओं को बधाई देता हूँ। साथ ही आशा करता हूँ कि वे अपनी शिक्षा व संस्कारों के बल पर नए आदर्श स्थापित करते हुए समाज और विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़ायेंगे। आप विशेष बधाई के पात्र हैं क्योंकि मुक्त विश्वविद्यालय से पढ़ने का मतलब है कि आप में न केवल दृढ़ विश्वाश है बल्कि आगे बढ़ने की तीव्र इच्छा शक्ति है।

राष्ट्र का निर्माण और समाज को लाभ पहुँचाना ही सभी विश्वविद्यालयों का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। यह उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति के संरक्षण के साथ–साथ प्रतिभाशाली युवाओं का निर्माण करते हुए उन्हें मानवीय मूल्यों पर आधारित जीवनशैली के लिए प्रोत्साहन देता रहेगा, ऐसी मुझे उम्मीद है।

यहाँ पर उपस्थित छात्रों! आपको इस बात का पूरा एहसास होना चाहिए कि शिक्षा एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है। जीवन में निरन्तर नवीन ज्ञान की खोज करते रहना और जीवन मूल्यों के आधार पर राष्ट्र और समाज के लिए सफलता पूर्वक कार्य करते रहना ही आपकी बड़ी जिम्मेदारी है। आज दुनियाभर में भारी सम्भावनाएं और अवसरों की पेशकश की जा रही है। अपनी कल्पनाएं बढ़ाते हुए नई सम्भावनाओं का पता लगाने व उनमें सफल होने के लिए आपको लगातार परिश्रम करते रहना चाहिए।

इस विश्वविद्यालय को राज्य के पर्वतीय व मैदानी आदि क्षेत्रों के साथ देश के अन्य राज्यों के विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा शुलभ कराने की व्यवस्था हेतु विशेष प्रयास करना चाहिए। दूरस्थ शिक्षा पद्धति में सेवारत पुरूषों व महिलाओं के साथ–साथ सभी आयु वर्ग वालों के लिए शिक्षित होने का अवसर उपलब्ध होता है।

सभी के लिए हर्ष की बात है कि आज इस विश्वविद्यालय की छात्र संख्या चालीस हजार से भी अधिक हो चुकी है। निरन्तर बढ़ती हुई छात्र संख्या ही इस विश्वविद्यालय की कार्य प्रणाली में सार्थकता सिद्ध करती है। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय आने 08 क्षेत्रीय केन्द्रों तथा 237 अध्ययन केन्द्रों द्वारा पारम्परिक विषयों के साथ रोजगारपरक शिक्षा के 70 से भी अधिक पाठ्यक्रमों का संचालन कर रहा है। इसके माध्यम से कला, विज्ञान, वाणिज्य, प्रबन्धन आदि विषयों के संचालन द्वारा लोगों के शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर पर आधार पाठ्यक्रम के रूप में मानव मूल्य व आचार जैसे प्रश्नपत्र को शामिल किया गया है। आज के परिप्रेक्ष्य में मूल्यों के प्रति सजग रहना विश्वविद्यालयों का भी अपना एक अलग दायित्व है साथ ही इस विश्वविद्यालय ने अपने आधार पाठ्यक्रमों मे संस्कृत भाषा जानने के इच्छुक छात्रों के लिए सहज संस्कृत बोध नामक प्रश्नपत्र को शामिल करके सराहनीय कार्य किया है। मेरी दृष्टि में पाठ्यसामग्री की भाषा सरल एवं शैली बोधगम्य होनी चाहिए। इस हेतु विश्वविद्यालय को निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए।

मैं चाहता हूँ कि प्रदेश के दुर्गम स्थानों में निवास करने वाले सभी इलाकों के किन्हीं भी कारणों से उच्च शिक्षा से वंचित अथवा नियमित कक्षाओं में प्रवेश लेने में असमर्थ लोगों की उच्च शिक्षा के प्राप्ति में सरलता प्रदान करना इस विश्वविद्यालय की नैतिक जिम्मेदारी है। यही लक्ष्य भी होना चाहिए। भौगोलिक कारणों तथा सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों से जूझती हुई स्थानीय आवश्यकताओं की मांग के अनुरूप छात्रों के कौशल विकास पर बल देते हुए रोजगार हेतु सक्षम बनाने का गम्भीर प्रयास करना चाहिए।

मेरी अपेक्षा है कि सूचना एंव संचार के सभी आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से शिक्षा में रूचि रखने वाले लोगों के अलावा भी सभी जरूरतमंदों को दूरस्थ शिक्षा पद्धति से उच्च शिक्षा का लाभ दिया जाए। विश्वविद्यालय छात्रों को डिजिटल लिट्रेसी प्रदान करते हुए पूरे प्रदेश में उच्च शिक्षा के लिए प्रभावशाली गति प्रदान करने का प्रयास करे। जो लोग कई कारणों से औपचारिक पद्धति द्वारा उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते, उनके लिए ओपन एजेकेशनल रिसोर्सज(OER) की खास उपयोगिता होगी। इसके माध्यम से कौशलपरक शिक्षा को कम से कम समय में प्रदान करने और पाठ्यसामग्री के विकास के साथ–साथ निर्माण में भी सहायता मिल सकती है।

मुझे यह जानकारी है कि यहाँ पर समुदायिक रेडियो 'हैलो हल्द्वानी' का संचालन भली–भाँति हो रहा है। यह कार्य मुक्त और दूरस्थ शिक्षा पद्धति को सफल बनाने में सहयोगी होगा। सामुदायिक रेडियों के सफल संचालन के लिए भिन्न–भिन्न विषय क्षेत्रों के विद्धानों से आग्रह करके सम–सामयिक नवीन पहलुओं पर वार्ता का प्रसारण किया जाना चाहिए। जिससे छात्रों को अपनी पाठ्यसामग्री और रूचिकर लगे। Community Radio का प्रयोग सबसे अधिक छात्रों के लिए ही किया जाना चाहिए। इससे पाठ्यसामग्री की कठिनाइयां दूर होंगी और छात्रों की अभिरूचि बढ़ेगी।

आधुनिक सूचना एंव तकनीकी के द्वारा आप दूरस्थ शिक्षा के सभी पाठ्यक्रमों को लोकप्रिय बना सकते हैं। इस विश्वविद्यालय के लिए शिक्षा पद्धति में तकनीकी का प्रयोग नितान्त आवश्यक है। चूंकि प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से बदलाव आ रहे हैं, इसलिए बहुत सारी जानकारियां जनसाधारण के पास पहुँचने से पहले ही ओझल या अप्रासंगिक हो जाती हैं। अतः यह बहुत आवश्यक है कि नई जानकारी के साथ विश्वविद्यालय अपनी पाठ्यसामग्री को अपडेट करता चला जाए। जो भी पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हों उन्हें व्यापक दृष्टि से नवीन बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी उपयोगिता सिद्ध हो सके। यह कार्य विश्वविद्यालय में निरन्तर होना चाहिए। MOOC का उपयोग भी लाभकारी हो सकता है।

समाज का युवा वर्ग रोजगार की समस्याओं से जूझता हुआ नजर आता है। अतः कामकाजी छात्रों और रोजगार की खोज करने वाले लोगों के लिए वर्तमान कार्यक्रमों में रोजगार हेतु कौशल का समावेश होना चाहिए। विश्वविद्यालय ऐसे रोजगारपरक पाठ्यक्रमों को लक्ष्य करके संचालित करे जिससे युवा वर्ग को रोजगार की सम्भावनाओं में अपनी सफलता ढूंढने में आसानी हो। निकट भविष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्यक्रम डिजायन किये जाने चाहिए जिनसे छात्रों के लक्ष्यों की पूर्ति सम्भव हो सके। Digital foreign language courses के बारे में भी सोचना चाहिए। इसकी CD बनाई जा सकती है।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा प्रदान करता है। ऐसे में रोजगार के अवसरों को विकसित करना तथा ऐसे पाठ्यक्रमों का निर्माण करना जिनसे विद्यार्थी अपने वैचारिक आदान–प्रदान से एक–दूसरे को प्रेरित भी कर सकें। विश्वविद्यालय का यह सराहनीय प्रयास होगा।

शिक्षण विधि में अधिक आसानी एवं गुणवत्ता लाने के लिए विश्वविद्यालय स्मार्ट कैम्पस बनाये जिसमें अधिक से अधिक वर्चुअल क्लास रूम या आभासीय शिक्षण कक्ष की व्यवस्था हो। अपनी कार्य प्रणाली में नवीनता लाने के लिए विश्वविद्यालय का यह अच्छा प्रयास होगा। आवश्यकतानुसार डिजीटल लाइब्रेरी एवं ई–कन्टैन्ट का निर्माण भी इस विधा में किया जाना उचित होगा। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय के शिक्षक छात्रों से संवाद करें। इस प्रणाली को छात्र और शिक्षक के बीच सीधे संवाद का जरिया बनाना चाहिए, जिससे पाठ्यसामग्री भी छात्रोपयोगी हो सके।

दूरस्थ शिक्षा के विश्वविद्यालय में अलग–अलग परिस्थितियों और परिवेशों के लोग प्रवेश लेते हैं। इन्हें शिक्षित करने का जिम्मा भी इन्हीं विश्वविद्यालयों का है। मैं पुनः सुझाव देता हूँ कि आज की सूचना और प्रौद्यौगिकी के परिवेश में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को अपने देश के तथा देश के बहार के भी मुक्त विश्वविद्यालयों की कार्य प्रणाली पर अध्ययन करना चाहिए। जिससे उत्तराखण्ड की भौगोलिक व सामाजिक परिस्थितियों में यह विश्वविद्यालय अपनी शिक्षा प्रणाली के द्वारा उच्च शिक्षा के विकास में एक अलग स्थान प्राप्त कर सके।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय कौशल मिशन की स्थापना की है। युवाओं का कौशल विकास करना ही इस मिशन का मुख्य प्रयोजन हैं। विश्वविद्यालय को चाहिए कि इस मिशन के अनुरूप ही अपनी गतिविधियों का संचालन करे ताकि युवाओं में कौशल विकसित हो और वे आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हों। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय इस दिशा में कार्य कर रहा है, यह संतोषजनक बात है। विश्वविद्यालय को चाहिए कि छात्रों को रोजगार की चुनौतियों का सामना करने के लिए कौशल आधारित शिक्षा देकर उन्हें सक्षम बनाने का प्रयास करे। इस हेतु उच्च शिक्षा में व्यवहारिक, व्यावसायिक और कौशलपरक पाठ्यक्रमों को एक साथ संचालन अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। यह कार्य प्रति वर्ष पूर्व छात्र सम्मेलन कराकर आगे बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए पूर्व छात्र प्रकोष्ठ (Alumni Cell) को प्रभावी बनाते हुए इस उद्देश्य की पूर्ति की जा सकती है।

विश्वविद्यालय को ग्रामीण इलाकों में रोजगार वृद्धि करने के दृष्टिगत स्थानीय लोगों की क्षमताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम चलाना चाहिए। इसके साथ ही अपने रोजगार परक पाठ्यक्रमों के लगातार प्रचार–प्रसार पर भी बल देना चाहिए। साथ ही प्लेसमेंट सैल के द्वारा प्लोसमेंट कैम्प लगातार आयोजन करना चाहिए। इससे पहले हमें उद्योग और उनसे सम्बन्धित निकायों से बातचीत जारी रखनी चाहिए।

मेरी जानकारी में है कि उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा कुछ गांवों को गोद लेकर उनके शैक्षिक विकास पर विशेष रूप से कार्य किया जा रहा है। मुझे खुशी है कि यह विश्वविद्यालय गोद लिए हुए गांवों की शैक्षिक उन्नति के लिए प्रयास करते हुए वहां के लोगों के स्वालम्बी बनाने में सहायक हो रहा है। साथ ही पुष्प उत्पादन, फल संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता से सम्बन्धित कार्य भी लगातार किये जाने चाहिए, जिससे ग्रामीण लाभान्वित हो सकें।

मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि दूरस्थ शिक्षा समाज के लगभग सभी वर्गों के लिए शैक्षिक विकास का प्रभावी माध्यम बन रही है। ज्ञान सम्पदा के इस नये युग में दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देना व इसके प्रति समाज में विश्वास जगाना मुक्त विश्वविद्यालयों की कड़ी जिम्मेदारी है। इन्हीं प्रयासों से मुक्त विश्वविद्यालय राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के उद्देश्यों पर भी खरा उतर सकता है। मुझे इस विश्वविद्यालय की छात्र संख्या को देखकर हर्ष है, यह प्रभावी कार्यशैली और इस विश्वविद्यालय के लोगों के प्रयासों का ही परिणाम है।

स्वच्छ भारत, आदर्श ग्राम, डिजीटल इंडिया जैसे राष्ट्रीय उदेश्यों में योगदान करने के लिए शिक्षकों को आगे आना होगा। शिक्षक के लिए उसके शिक्षण की प्रासंगिकता समाज और राष्ट्र के हित में होनी चाहिए। मुक्त विश्वविद्यालय को समाज की व्यापक उद्देश्यों के मार्ग पर कार्य करना चाहिए।

गांधी जी ने कहा है– '' शिक्षा के अभाव में स्वस्थ समाज का निर्माण सम्भव नहीं है। सही मायने में शिक्षा वही है जो देश के युवाओं को स्वावलम्बी बनाकर राष्ट्र को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सके।''

उपस्थित छात्रों!

दीक्षान्त समारोह का आयोजन विश्वविद्यालय का गौरव तो होता ही है किन्तु यह आपकी शिक्षा के प्रति ईमानदारी और कठोर परिश्रम को प्रमाणित करने का अवसर है। इस अवसर पर आपने परीक्षाओं में श्रेष्ठ होने का प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया है। इसके लिए मैं आपको बधाई देने के साथ ही प्रेरणा व सुझाव देता हूँ कि– ''शिक्षा के सशक्त छात्र निजता से ऊपर उठ जाता है, वह अपने आप पर

केन्द्रित नहीं होता। ऐसे अव्वल छात्रों को गम्भीरता से विचार करना चाहिए कि वे समाज में सुधार के लिए किस प्रकार योगदान करके समाज को विकसित कर सकते हैं। ऐसा ज्ञान जो समाज के साथ साझा न किया जाए वह अप्रासंगिक हो जाता है। समाज को कुछ देने के विषय में आपको सोचना होगा। किसी शिक्षित व्यक्ति के लिए सामाजिक सहयोग ही चिन्ता का विषय होना चाहिए। आपकी यह उपलब्धि तभी सार्थक होगी जब आप समाज के सुधार, समाज के विकास और लोगों को विकास करने के लिए निरन्तर प्रोत्साहित करते रहेंगे।''

शिक्षा से प्राप्त संस्कारों द्वारा ही आप अपने आत्मबल से जीवन में चुनौतियों का सामना करेंगे। महापुरूषों के जीवन से सीखना, उत्कृष्ट पुस्तकों का अध्ययन करना और नया सीखने की ललक रखना ही आपका नैतिक दायित्व है। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप जीवन मूल्यों की राह पर चलकर सकारात्मक सोच के द्वारा देश और समाज का भला करने में सक्षम होंगे। भारतीय संस्कृति के अनुरूप कार्य करते हुए राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देना ही आपकी इस उपलब्धि को प्रमाणित करेगा।

प्रिय शिक्षार्थियों!

मुझे आशा है कि जिस मकसद से आपने शिक्षा पायी है उसे अपनी प्रतिभा और संस्कारों से तालमेल बनाकर अपना भविष्य सुनिश्चित करेंगे। साथ ही राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होकर इस विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ायेंगे।

मेरी अभिलाषा है कि उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में निरन्तर सहायक साबित हो। नये–नये बदलावों के साथ यह विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से जनसाधारण को उच्च शिक्षा के प्रति जागरूक करते हुए अपनी गरिमा और प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा।

इस अवसर पर उपाधि पाने वाले सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ तथा विश्वविद्यालय के कुलपति, कार्यपरिषद, विद्यापरिषद के सभी सदस्यों सहित संस्था से जुड़े सभी लोगों को तृतीय दीक्षान्त के सफल आयोजन के लिए बधाई और धन्यवाद देता हूँ।

धन्यवाद **जय हिन्द!**